



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 532]
No. 532]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 6, 1985/अग्राहायण 15, 1907
NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 6, 1985/AGRAHAYANA 15, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके ।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 6 दिसम्बर, 1985

प्रधिसूचना

सं. 246/85-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सा. का. नि. 894 (प्र).—केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो गया है कि एक प्रथा के अनुसार ओ केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 3 के अधीन उत्पाद-शुल्क के उद्ग्रहण (जिसके अंतर्गत उसका उद्ग्रहण न किया जाता भी है) की बाबत साधारणतया प्रचलित थी, उक्त अधिनियम की पहली अनुसूची की मब सं. 13 के अंतर्गत सम्मिलित, वनस्पति उत्पादों की कतिपय किस्म 15 अक्टूबर, 1983 को प्रारम्भ होने वाली और 29 अप्रैल, 1984 को समाप्त होने वाली अवधि के दौरान, उन पर प्रभावी उत्पाद-शुल्क की बाबत केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर जारी की गई किसी प्रधिसूचना के साथ पठित, उक्त पहली अनुसूची में विनिर्दिष्ट कर के प्रति निर्देश से उद्ग्रहीत उत्पाद-शुल्क से उच्चतर शुल्क की रकम के लिए, भारत सरकार के

वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) को अधिसूचना सं. 259/83-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 15 अक्टूबर, 1983 के अनुसार, दी थी;

अतः, केन्द्रीय सरकार, वित्त अधिनियम, 1983 (1983 का 11) की धारा 55 की उपधारा (4) और वित्त अधिनियम, 1984 (1984 का 52) की धारा 52 की उपधारा (4) के साथ पठित, उक्त अधिनियम की धारा 11ग द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निवेश देती है कि, उक्त प्रथा के न होने पर, ऐसे वनस्पति उत्पादों की ऐसी किस्मों पर उक्त केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम के अधीन संवेद्य उत्पाद-शुल्क और उक्त वित्त अधिनियम, 1983 की धारा 55 की उपधारा (1) और उक्त वित्त अधिनियम की धारा 52 की उपधारा (1) के अधीन संवेद्य विशेष उत्पाद-शुल्क का भाग वनस्पति उत्पादों की ऐसी किस्मों की बाबत संदाय किया जाना अपेक्षित नहीं होगा जिन पर उक्त उत्पाद-शुल्क और उक्त विशेष उत्पाद-शुल्क का वह भाग, उक्त प्रथा के अनुसार, उपर्युक्त अवधि के दौरान कम उद्ग्रहीत किया गया था ।

[फा. सं. 90/11/84ज.शु. 3]

एस. सी० जामा, सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 6th December, 1985

NOTIFICATION

NO. 246/85-CENTRAL EXCISE

G.S.R.894(E).—Whereas the Central Government is satisfied that according to a practice that was generally prevalent regarding levy of duty of excise (including non-levy thereof), under section 3 of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), certain varieties of vegetable product, falling under Item No. 13 of the First Schedule to the said Act, were liable to a higher amount of duty of excise in terms of the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 259/83-Central Excises, dated the 15th October, 1983, than what was levied with reference to the rate specified in the said First Schedule, read with any notification for the time being in force issued by the Central Government in relation

to the duty of excise so chargeable, during the period commencing on the 15th October, 1983 and ending with the 29th April, 1984.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 11 C of the said Act, read with sub-section (4) of section 55 of the Finance Act, 1983 (11 of 1983) and sub-section (4) of section 52 of the Finance Act, 1984 (21 of 1984), the Central Government hereby directs that so much of that portion of the duty of excise payable under the said Central Excise and Salt Act, 1944 and the special duties of excise payable under sub-section (1) of section 55 of the said Finance Act, 1983 and sub-section (1) of section 52 of the said Finance Act, 1984, on such varieties of vegetable product, but for the said practice, shall not be required to be paid in respect of such varieties of vegetable product on which that portion of the said duty of excise and the special duties of excise were short levied during the period aforesaid in accordance with the said practice.

[F. No. 90/11/84-Ex-3]
S. C. JANA, Under Secy.